दिनांक :- 01-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ०-फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड कला (अनुशांगिक)
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई :- तृतीय
पत्र :- प्रथम

अध्याय :- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Source of Ancient Indian History)

सबसे प्राचीन अभिलेख सिंधुघाटी के मुहरों पर उत्कीर्ण है किंतु इनको अभी तक पढ़ा नहीं जा सकता है। ऐतिहासिक काल में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के है। अशोक के अभिलेखों से अशोक के धर्म एवं राजत्व के आदर्श पर प्रदीप्त प्रकाश पड़ता है। इन अभिलेखों से अशोक के अभिलेख शासनकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं - कलिंगयुद्ध अशोक की नीति में परिवर्तन, साम्राज्य - सीमा, प्रशासनिक सुधार

शैव धर्म का विवरण प्राप्त होता है। अशोक के बाद के अभिलेखों को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है। सरकारी अभिलेख और निजी अभिलेख। सरकारी अभिलेख भी दो प्रकार के है - प्रशस्तियाँ तथा भूमि-अनुदान पत्र। समुद्रगुप्त की प्रयाग अभिलेख प्रशस्तियों का उत्तम उदाहरण है जिससे समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का ज्ञान हमे होता है। यवन शासक मिलिन्द का अभिलेख रेह से प्राप्त हुआ जो उसके विषय में यथेष्ठ जानकारी देता है। इसी प्रकार राजा भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में उसकी उपलब्धियों का वर्णन है। कलिंगराज खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख रूद्रदामन का गिरनार अभिलेख स्कन्दगुप्त का भित्तरी स्तम्भ लेख और जूनागढ़ अभिलेख, बंगाल के शासक विजय सेन

का देवपाड़ा अभिलेख तथा चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख महत्व पूर्ण है।

अभि अनुदान-पत्र अधिकतर तांबे की चादरों पर उत्कीर्ण हैं इन अनुदान-पत्रों में भूमिखण्ड की सीमा के उल्लेख के साथ साथ समय का भी वर्णन है। इनमें शासकों की उपलब्धियों का भी उल्लेख मिलता है। लेकिन हमें ध्यान रखना चाहिए कि राजकवियों ने प्रशस्तियाँ और अनुदान-पत्रों में कुछ बातें बढ़ाकर की है। अतः उनके विवरण को पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता है। बड़ी संख्या में पूर्व मध्यकालीन भूमि अनुदान पत्र मिलने से इतिहासकारों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि लगभग 600-1200 ई० के बीच भारत में सामन्ती अर्थव्यवस्था प्रचलित थी। चट्टानों और स्तम्भों पर खुदे अभिलेखों के प्राप्ति स्थानों से शासकों के राज्य की सीमाओं का अनुमान लगाया जाता है। सम्राट अशोक के अभिलेखों

के प्राप्ति-स्थानों में उसके राज्य के विस्तार की जानकारी मिलती है। निजी अभिलेखों मंदिरों में मूर्तियों में उत्कीर्ण हैं। इन अभिलेखों पर खुदी तिथियों से मंदिरों के निर्माण यह मूर्ति प्रतिष्ठान के समय की जानकारी मिलती है। साथ ही इनमें मूर्तिकला एंव वास्तुकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है तथा तत्कालीन धार्मिक दशा की जानकारी प्राप्त होती है। इन अभिलेखों से भाषाओं के विकास पर भी प्रकाश पड़ता है। गुप्तकाल के पहले के अधिकतर अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और उनमें ब्राह्मणेतर धार्मिक सम्प्रदायों - बौद्ध धर्म का जैन धर्म का उल्लेख है। गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में हैं और उनमें विशेष रूप से ब्राह्मण धर्म का उल्लेख है। निजी अभिलेख तत्कालीन राजनीतिक दशा पर भी प्रकाश डालते हैं। इनमें

कुछ उच्च पदाधिकारियों के पदों तत्कालीन कर प्रणाली आदि काभी उल्लेख है। निजी अभिलेखों से नये तथ्य भी प्रकाश में आये है। समुद्रगुप्त के प्रयाग-स्तम्भ अभिलेख और खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से हमें उन शासको की उपलब्धियों का ज्ञान होता है। रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख उसकी राज्य की सीमा पर प्रकाश डालता है सातवाहन शासको का सम्पूर्ण इतिहास ही उनके अभिलेखों पर आधारित है। कुषाण सम्राटो के अभिलेख ही कुषाणकालीन इतिहास और उसकी संस्कृति के जानकारी के स्त्रोत है। राजा चन्द्र का मेहरौली अभिलेख और हर्षवर्धन का मधुवन एंव बांसखेरा अभिलेख भी महत्वपूर्ण है। उत्तरी भारत के पाल शासको के अभिलेख भी महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार दक्षिण भारत के पल्लव, पांड्य, चोल, चालुक्य राष्ट्रकूट वंशो का इतिहास लिखने में इन शासको के अभिलेख में बहुत मदद मिलती है।

विदेशों में भी कुछ अभिलेख पाये गये है जो प्राचीन भारत इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश डालते है। एशिया माइनर से प्राप्त बोगजकोई अभिलेख (1400 ई० पू०) में वैदिक देवताओं - इन्द्र, मित्र, वरुण आदि का वर्णन मिलता है। इसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वैदिक आर्यों के वंशज एशिया माइनर में रहते थे। मिस्र में तेल अमर्ना में मिट्टी की कुछ तख्तियाँ मिली है जिनपर बेबीलोनिया के कुछ शासकों के नाम खुदे है। ये नाम ईरान और भारत के आर्य शासकों के नामों जैसे है। पर्सिपोलिस और बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ईरानी सम्राट दारा प्रथम ने सिंधु घाटी पर अधिकार कर लिया था। इसी प्रकार मेसोपोटामिया से प्राप्त मिट्टी के फलकों से भी सुमेरवासियों और भारतीयों के बीच व्यापारिक सम्बंध का पता चलता है।

सिक्के (Coins) :- प्राचीन भारत के इतिहास के निर्माण मे सिक्कों का स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत के प्राचीन तम सिक्के 'आहत सिक्के' (Punch marked coins) कहे जाते है जिनकी तिथि छठी सदी ई० पू० मानी जाती है। इन पर अनेक प्रकार के चित्र अंकित है। इनपर किसी प्रकार का लेख नहीं है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इन सिक्कों को शासकों के अतिरिक्त सम्भवतः व्यापारियों, व्यापारिक श्रेणियों और नगर-निगमों ने चालू किया था। किंतु यूनानियों के आगमन के बाद सिक्का के फलस्वरूप में परिवर्तन आया। जब उत्तर-पश्चिम भारत पर बैक्ट्रिया के हिन्दू-यूनानी शासकों ने अधिकार कर लिया और सिक्का-लेखवाले सिक्के चलाये। तो भारतीय शासक भी सिक्का लेखवाले सिक्का चलाये। ये सिक्के प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए है। शक, पल्लव और कुषाण